MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

UGC Approved Jr.No.62759

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

विशेषांक

फरवरी—२०१८

अंतर्जालीय हिंदी साहित्य : स्वरूप एवं संभावनाएँ

Editor

डॉ. बापूजी घोलप

डॉ. भाऊसाहेब नवले

डॉ.प्रवीण तुपे

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At Post Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

13. इंटरनेट का हिंदी साहित्य के विकास में योगदान
प्रा. पाटोळे अनिता किसन, अ. नगर || 51

14. सुधा ओम धिंगरा का काव्य
प्रा. अनंत नानाजी केदारे, अहमदनगर || 54

15. अंतर्जाल पर हिंदी साहित्य का विकास
सरला सूर्यभान तुपे, नासिक || 58

16. हिंदी साहित्य का अंतर्जालीय परिप्रेक्ष्य
प्रा. दशरथ काशीनाथ खेमनर, प्रवरानगर || 61

17. आंतरजालीय हिंदी साहित्य (नारी शोषण की समस्या)
प्रा.डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे, देऊर || 63

18. सूचना प्रौद्योगिकी और वेबदुनिया पत्रकारिता
प्रा.डॉ. पंडित बन्ने, सोलापुर || 67

19. अंतर्जालीय हिंदी पत्रकारिता
डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे, माकणी || 69

20. इंटरनेट पर प्रकाशित हिन्दी पत्र– पत्रिकाओं का अध्ययन
प्रा. डॉ. अनिता वेताळ /अत्रे, अहमदनगर || 70

21. इंटरनेट का हिंदी साहित्य के विकास में योगदान
प्रा. के. के बच्छाव, मालेगाव कॅम्प || 72

22.अंतरर्जालीय हिंदी साहित्य और प्रवासी साहित्यकार
डॉ. प्रविण तुळशीराम तुपे, अहमदनगर || 75

23.अंतर्जालीय अभिव्यक्ति पत्रिकापर भूमंडलीकरण प्रभाव
प्रा. उत्तमराव येवले, अहमदनगर. || 77

24. अंतर्जालीय हिंदी साहित्य का स्वरूप
सुश्री जयश्री पाटील, सांगली. || 80

25.अंतर्जालीय हिंदी साहित्य और विज्ञापन
गडाख दीपाश्री कैलास, औरंगाबाद || 84

Scanned with OKEN Scanner

21

इंटरनेट का हिंदी साहित्य के विकास में योगदान

प्रा. के. के बच्छाव
हिंदी विभाग अध्यक्ष
एस.पी.एच. महिला महाविद्यालय, मालेगाव कॅम्प
मो.नं. ९४२१६०७८०३
Email- bkk.sph@gmail.com

बीसवी सदी के अंतीम दशक से भारत देश में सामाजिक राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिवर्तन के साथ सूचना और तकनीकी क्षेत्र में भी परिवर्तन आने लगा अर्थव्यवस्था में उदारीकरण की स्थिति से नीजीकरण, भूमंडलीकरण से संपूर्ण भारतीय सामाजिक जीवन में परिवर्तन हुआ जिसका परिणाम यह हुआ की विश्व ही एक ग्लोबल व्हिलेज बन गया। इसका प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष प्रभाव हिंदी साहित्य पर भी पडा।

इक्कसवी सदी के पहले दशक में सूचना और प्रौद्योगिको के ससाधनो में इंटरनेट, ई मेल फेसबुक जैसे अंतर्जलीय संसाधनो ने भारतीय जनमानस को बहुत प्रभावित किया है। इंटरनेट के महाजाल ने विश्व के साथ भारत जैसे विकसनशील देश में आमुलाग्र परिवर्तन लाया है। सामान्यतः १९८३ के पुर्ण इंटरनेट नही के बराबर था। इंटरनेट की सुविधा आने से संचार क्षेत्र में अभुतपूर्व क्रांती आयी। इंटरनेट का अर्थ ही यह है की दुनिया के किसी भी कोने में किसी भी विषय की जानकारी प्राप्त कर सकते है।

इंटरनेट सुचनाओं और जानकारी का महासागर है जिसका मुख्य कार्य है सुचनाओं का आदन–प्रदान करना। इतना ही नही सभी संचार माध्यमों में इंटरनेट ने सचमूच ही एक क्रांती की है। इंटरनेट पर साहित्य से जुडी विश्व के प्रमुख समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, किताबे, उपलब्ध है। इंटरनेट के कारण सुचना और प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में जो क्रांती हुई है जिसके फलस्वरूप जनसंचार

माध्यमों में हिंदी का प्रयोग बढने लगा है। और निसंदेह कहा जा सकता है की हिंदी भाषा के प्रयोग के कारण इंटरनेट आज घर घर तक पहुँचा है। हिंदी के साथ ही भारतीय भाषाओं के साहित्य में उपलब्ध कालजयी गौरवपुर्ण कृतियाँ इंटरनेट के साथ सी.डी. के रूप में उपलब्ध है।

इंटरनेट के माध्यम से ब्लॉग, फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल नेटवर्किंग साईटों का प्रचार एवं प्रसार हिंदी प्रेमी कर रहे है। इलेक्ट्रानिक माध्यमों में इंटरनेट का स्वरूप बहुत व्यापक बन गया है। इंटरनेट के माध्यम से जो हिंदी प्रयुक्त हो रही है जिसमे ब्लॉग, ट्विटर, फेसबुक, वेबसाईट, इ. इंटरनेट के ही अंग है। इंटरनेट की भाषा कुछ आलोचको के अनुसार हिंदी नही इंग्लिश है। लेकीन इस संदर्भ में यह तर्क दिया जाता है की, इस नई टेक्नॉलाजी का प्रयोग का भाषा पर कुछ ना कुछ जरूर असर पडेगा। इसे भाषा विकास मानकर अंतरराष्ट्रीय हिंदी के रुप में स्वीकार कर लेना अधिक उपयुक्त होगा।

भारत बहुभाषिक देश है। यहाँ की अधिकतर भाषाएँ साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध हैं किंतु इन सभी भाषाओं में संगणक प्रणाली उपलब्ध नही है। हिंदी के साथ आज ९ से १० भाषाएँ इंटरनेट पर सहज रुप से उपलब्ध होने के कारण भारतीय लोग अपनी भाषा के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर रहे है। हिंदी भाषा एवं साहित्य आज केवल भारत तक ही सीमित नही है बल्कि विश्वभाषा में प्रमुख स्थान ग्रहण कर चुकी है। हिंदी भाषा इंटरनेट के माध्यम से छोटेसे देहात से विश्व के किसी भी कोने तक पहुँच रही है। हिंदी भारत देश के अलावा विश्व के १३६ देशों में लिखी बोली एवं समजी जाती है। विदेशो में रहनेवाला वर्ग हमारे साहित्य एवं भाषा के माध्यम से देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिवेश से जुडा है।

हिंदी भाषा एवं साहित्य को प्रगति के पथ पर ले जाने में प्रिंट मिडिया का भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। आज भारत में सर्वाधिक पढा जाने वाला अखबार दैनिक भास्कर है जो अँग्रेजी अखबारो की तुलना मे कही अधिक पढा जाता है इससे यह स्पष्ट होता है की इन अखबारो द्वारा हिंदी भाषा का प्रचार और प्रचार हो रहा है।

हिंदी का प्रचार प्रसार में ब्लाग का योगदान भी हो रहा है। ब्लॉग का स्वरूप किसी डायरी जैसा होता है। जो साधारण एक व्यक्ती द्वारा लेखन किया जाता है। हिंदी ब्लागिंग के बारे में जब हम सोचते है तो हमारे सामने अनगिनत ब्लॉग आते है। और बहुत सारे लेखक उसमे नियमित रूप से लिखते है। इस ब्लॉग के माध्यम से हम हिंदी से संबंधित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक खबरे देख और पढ सकते है। सृजन और सरोकार इस ब्लॉग पर कविता और हिंदी साहित्यिक और लघुकथाओं के साथ ले सकते है। सबसे महत्वपूर्ण पोस्टर्स है। राजभाषा मानस इस ब्लॉग पर हिंदी भाषा हिंदी साहित्य हिंदी की उपयोगिता के साथ अन्य जानकारी प्राप्त होती है। इस ब्लॉग से हिंदी का प्रचार और प्रसार हो रहा है। लेकिन मिडीया के इन सभी साधनों में इंटरनेट का स्थान अग्रणी है। इस महाजाल के कारण हम विश्व की किसी भी क्षेत्र की जानकारी हमे एक जगह बैठकर प्राप्त होती है। भारतीय भाषाओं में संगणक तकनीकी के क्षेत्र में हो रहे विकास के कारण कठिण से कठिण क्षेत्रो में भी हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है। हिंदी भाषा से संबंधित आज अनेक वेबसाईट्स उपलब्ध है और इन पर हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति आदि की बहुत सी जानकारी मिलती है।

उदा.

१) WWW.rajbhasha.com

२) WWW.indianlanguages.com,

WWW.hindinet.com जैसे अनेक वर्ल्डवाईड वेब हिंदी से संबंधित है और इन्ही पर हिंदी भाषा साहित्य और संस्कृति आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है।

हिंदी साहित्य हजारो वर्षो से लिखित रूप में समाज के जनजीवन को चित्रित है। इस साहित्य से प्रेरणा, आंनद, समाज के सभी स्तर के लोग ले रहे है। किंतु विगत कुछ वर्षो से सूचना और प्रौद्योगिकी के नये नये आविष्कारों में इंटरनेट जैसे माध्यम से हम घर बैठकर हिंदी भाषा की आदिकाल से लेकर २१ शती

Scanned with OKEN Scanner

के किसी भी साहित्यकार का साहित्य पढ सकते है। इंटरनेट के इस अविष्कार का हिंदी साहित्य के प्रचार प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उदा. आज की युवा पिढी को अगर स्वतंत्रता पुर्वकाल के कृषक जोवन का परिचय जानने की इच्छा प्राप्त होती है तो अध्यापक उसे प्रेमचंद के गोदान उपन्यास का जब संदर्भ देते है तो छात्र अपनी सुविधा अनुसार अपने लॅपटॉप या स्मार्ट फोन द्वारा तुरंत प्रेमचंद या गोदान नाम को सर्च करता है तो उसे प्रेमचंद का संपुर्ण जीवन परिचय के साथ गोदान उपन्यास उपलब्ध होता है। परिणाम उसे ग्रंथालय में जाकर उसे ढुँढने एवं बाजार में जाकर उस किताब को खरीदने की आवश्यकता नही होती। यह युवा वर्ग समजता है की, जब हमे कोइ भी लेखक का परिचय, उसकी किसी रचना का परिचय जानकारी, साहित्य की किसी भी विधा उपलब्ध होती है तो हम हमारा समय बर्बाद क्यों करे? आज इंटरनेट पर मोहन राकेश के आधे अधुरे जैसे पारिवारीक नाटक उपलब्ध है। अनेक हास्य व्यंग्य कविताओं का जो आयोजन होता है वह इंटरनेट, यु टयुब पर हम देख सकते है सुन सकते है अर्थात उसे साहित्य का आनंद ले सकते है।

वर्तमान काल में जहाँ पुस्तको को छपवाना उसे प्रकाशित करना आसान नही है। ऐसे काल में इंटरनेट के माध्यम से साहित्य का आनंद हम ले सकते है। जो सुविधाजनक है। इंटरनेट से साहित्य का प्रचार और प्रसार इस कारण से भी हो रहा है की कोइ साहित्यकार जब अपनी कथा, कविता, गीत, गजल को अपनी वेब पर डालता है तो विश्व के अनेक व्यक्ति उसे एक साथ अपने इंटरनेट के माध्यम से पढ सकते है और लाइक भी कर सकते है। जिससे उस साहित्यकार का उत्साह बढता है और उसे और सृजनात्मक साहित्य लेखन की प्रेरणा मिलती है। आज साहित्य के पढने के केवल साधन बदले है साध्य और मंजील तो वही रहेगी इसमें किसी को भी संदेह नही होना चाहिए। प्रकृति का नियम भी यही कहता है की, समयानुकूल मनुष्य समाज, एवं साहित्य में परिवर्तन होना अपेक्षित है। आज की पीढी भी अगर इंटरनेट के माध्यम से हिंदी साहित्यकारो और उनकी रचनाओंसे परिचित होती है तो हम सब हिंदी प्रेमीयों के लिए यह एक अभिमान का विषय हो सकता है। हिंदी आज केवल इंटरनेट हि नही इलेक्ट्रॉनिक मिडीया, दूरदर्शन इ. माध्यमों से हिंदी भाषा को समझनेवाला वर्ग बढ रहा है वह सुखद समाचार है। आनेवाला युग व्हर्च्युअल युनिव्हसिटी का है अर्थात संगणक इंटरनेट के द्वारा ही वे शिक्षा प्राप्त कर सकते है ऐसा चित्र दिखाइ दे रहा है। दूरसंचार और डिजीटल क्रांती के कारण संवाद क्षेत्र के नये नये आयाम उद्घाटित हो रहे है।

संक्षेप में कह सकते है की इंटरनेट की सुविधा से हिंदी साहित्य के प्रचार एवं प्रसार में महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। किसी देहात में बैठकर साहित्य लेखन करनेवाले साहित्यकार हिंदी के साहित्य को इंटरनेट के द्वारा विश्व के किसी भी देश का व्यक्ति पढ सकता है आनंद ले सकता है। भविष्य में भी इंटरनेट के माध्यम से विश्व में हिंदी प्रथम स्थान ग्रहण करेगी और विश्व के प्रथम स्थान की भाषा बनेकी इसमें संदेह नही।

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner